स्वर प्रवाह

नियम, नियंत्रण, संतुलन और अनुशासन सीखना है तो प्रकृति से सीखो। प्रकृति के नियम अटल हैं और वह स्वानुशासित रूप में सतत् अपना कार्य करती रहती है। इसीलिए प्रकृति की व्यवस्था शाश्वत है।

प्रकृति के ऋतु चक्र को देखो। ग्रीष्म में सूरज की प्रखरता से भुवन भट्टी बन जाता है। तपिश भी ऐसी कि वृक्ष की छांव भी राहत के लिए जैसे छांव ढूंढती नजर आती है। जीव-जन्तु, वनस्पतियां सब अस्त-पस्त। इस तपिश में भी ग्रीष्म की ऊर्जा पाकर वन पलाश प्रफुल्लित हो उठता है, नीम बौरा जाता है, अमलतास अम्लान कांति से दमक उठता है और सेमल अपनी मलिनता त्याग अनुराग भरे रक्तिम पुष्पों से खिल उठता है। उसके पुष्पों पर पक्षी मंडराते, कलरव करते उनमें संचित जल से अपनी प्यास बुझाते हैं। ग्रीष्म की इसी भीषण तपिश से सुधाकर का मन पसीजता है और वाष्पित होकर वह हवा के डैनों पर सवार होकर व्योम विचरण करता बादल का रूप धारण कर बरस पड़ता है।

वर्षा की रस धाराओं से सस्य श्यामला सुजलाम होकर सरसित-हर्षित हो सृजन के तराने गाने लगती है। पृथ्वी का कण-कण उर्वरित होकर हरीतिमा का महाकाव्य बन जाता है। वर्षित तानों पर झूमता प्रकृति का पात-पात मेघ मल्हार गाने लगता है। अंत में जो जिससे बना है उसी में मिलना चाहता है, के आधार पर सागर से उठा जल पृथ्वी पर बरस कर भी अपने उत्स से मिलने को मचल उठता है और जलधाराओं में उमड़ता अंततः सागर में समा जाता है। फिर हिमालय से उतर कर आता है शीत। प्रकृति का यह चक्र अबाध रूप से चलता है।

प्रकृति का दूसरा दृश्य जीव-जन्तुओं के संसार का। वन प्रांतर में वृक्ष से गिरे फल स्वतः उग जाते हैं। चूहों को सांप, सांप को नेवला, कीट पतंगों को पक्षी और जंगल के वन्य जीवो को बाघ आदि हिंसक जानवर नियंत्रित करते हैं। 'जीवो जीवस्य भोजनम' के आधार पर स्वतः संतुलन होता रहता है। एक-दूसरे के पूरक और उपयोगी प्रकृति का यह प्राकृत नियम भी निर्विघ्न चलता रहता है। किन्तु विकसित मस्तिष्क वाला मानव सुख, सुविधा और संग्रह की स्वार्थवृत्ति के कारण सह अस्तित्व के विराट स्वरूप को नहीं समझ पाता।

सह अस्तित्व को नकारता, प्रकृति-संतुलन को क्षति पहुंचाता जो जितना समझ पाता है, वह उतना ही जी पाता है। भ्रमित मानव शरीर यात्रा को ही जीवन समझ बैठता है जबकि जीवन न तो दिखाई देता है और न वह मरता है। अतः हम अपने सम्बंधों को पहचान कर एक-दूसरे के उपयोगी और पूरक बनें तथा सह अस्तित्व में रहते हुए सह अस्तित्व के लिए जीएं तभी जीवन सार्थक हो सकेगा। वैशाख के वैशिष्ट्य के साथ यह अंक आपके हाथों में-

देवेन्द्र शर्मा